

DPN 5728

Title: प्रचण्ड चण्डिका पद्धति / PRACANḌA CANDIKĀ PADDHATI

Run. No. 6419

Cat. No.

Micro. No.

Subject विधि / Ritual

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 12.5 x 6.5

Folios 12

Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus.:

Material: palmleaf / paper / thyaṣaphu /

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Smoky dark

Beginning, colophon, post-colophon:

गर्भगर्भ नेपादमाळा निदेश
new direction party.

0 cms.

5

10

15

20



१५
 १०
 रुक्मिणी वामदक्षिणयामन नागयष्टाय विनाश्या
 कललं यामयामि वयस्य विटपदी दवी मरुके
 मिदिगमना सदा द्वादसवशेया मरुमा लाविरु
 षिता दाकिनी वामयास्व कल्य सुश्रोन लात्यमां ४
 विद्युर्जटी नयना दक्षय कि वलाकिनी दंष्ट्रा क
 नालवदनां पिना भूतयाधनी वलिदान मरुजि

५
 रुक्मिणी मरुमा लाविरुषितां कया लकलिका रुक्मिणी
 वामदक्षिणयामन दवी गवाक्ष लाद कया लाया
 एकवर्ति कनकित कया लेन रोषन नाकिरीष
 ना मारुनिषेया माना की भय दवी ४ विरुक्त
 सुमरुके वर्यव वरुका नाहियु विन वरुजिका
 जिर्व मरुहि मधुर्न वामरु जगथा ॥ ७ वरुआलासा

नमो यवाले लालाश्च दीखरूप्यने कृत्वा यजुजः
यन्मन्त्रिकाने विनमदादी नमस्तथा मल्लनयनं
नमस्तविलिखयानि केलनयनं समन्वितं बहिनरुद
नयनं रूविम्विनिगयनं कुचविजलिखं मन्त्रि
का (हरुद्विजं रुदसमन्वितं) मन्त्राधनमस्तु दिः
थानमः ॐ नित्यि ० मन्त्रव नमिका मासीनमः ॐ

मन्त्रश्च नमिका मायलि वज्रवेवावनीथ दहिश्च
हिरेगु कश्चमसिद्धि दहिश्चममद्युन मालयश्च
कलाविकरु रुद स्वादं नित्यि ० यजुनमस्तु शाकवश्च
पूनश्चाला मल्लमस्तु कलिनमस्तु वावाहयनं य
था सर्वसिद्धिवर्हिनीथ सर्वसिद्धिजाकिनीथ व
ज्रवेवावनीथ ॐ रुदवहयनमस्तु ॐ रुदनिथ ॐ

रुसं निरुधसा ॥ ह्यनानावाक ॥ ओं ॥ कीं ॥ हंस ॥
 ह्यनाने पानपतिलीकृत्वा ॥ ओं ॥ खभाये स्वाहा ॥
 हृदयाय नमः ॥ ह्यादिखलु गायनि विनास्य ॥ या ॥
 यं ॥ अर्थ ॥ अं च मनीय ॥ पुन वाच मनीयं ॥ गर्भं पूर्वा ॥
 धूपं ॥ दियं ॥ नेवर्षं ॥ ताम्नादिकं ॥ मन्त्रमूर्त्तौ येष च ॥
 पुनस्तिकायै नमः ॥ ह्येति पूजयित्वा वलिं दद्यात् ॥

यथा वक्तव्यं वाचमीय ॥ दहि स्तुतिरगृह्य ॥ हंसं
 वनि मम सिद्धिं ॥ दहि स्तुति मम गुरुं ॥ नागयश्च कला ॥
 निकरुं रुद्रसाहनि वलिं दत्वा ॥ दद्यादक्रि (हो) डं वै
 हि न्येन म॥ वा म॥ ॥ डं ॥ जकि न्येन म॥ शनमा दद्यात् ॥ केष
 पुमानि संपूज्य दक्रि (हो) डं ॥ त्वनिधयं नमः ॥ वा म॥ यः
 मनिधयं नमः ॥ पूर्वोदिदिक् ॥ डं ॥ लं ॥ नमः ॥ च वलं ॥

ये मायाये वा लो विदि कू व क्क धा विरू वं रू धाय
रू धालाय नमः स मा नि वा य न मः श न न ॥ य ॥ न
वि द ला व र्हे भा व य न रा य था ज ग्नि भा स ल न य स
बु दि कू व उ क्क पू ज न रू ध य उ रू ध य रू दि उ क्क रू
सा हा ए व व नि नू नो दा कि नो म न नो रू धो नो वि
कू रू रू रू नि धो य म स ध रू रू रू हा रू न मः श नि धा

दं क्रि (सं) स मा दू कू द ल न मः श दि धा उ रू न स र्व व
रू रू थान मः श न द क्रि (सं) उ वी ज धा क्रि रू न मः श न
नः श य रू दि य ज ग्नि वू उ वी क्क न मः श ए व मा रू ध य रू
को मा यो व कू वी वा वा क्क रू रू धो नो रा मू अ य मः
हा ल क्क न मः रू नि यू ज य न मः श न व रू दि कू रू रू वा दि
कू रू क ला वा य वि क ला वा य अ नि क ला वा य म हा

कलावायनमः ॐ गिरुजयन् नमो धूयादिविः
ऊँ नार्क कप्तसमाययन् ॥ नमो निर्माली निर्माली
वासिनी दलावदिर्गसयगृह्णिता यथा सर्वविह
लदिनि यवपुत्रिकायद्वमिश्र ० ॥ अथः
वपुत्रिकास्तोत्र ॥ नारी गृह सलाजयवविनस
द्वधकयूषालनैरासकाकलमपुर्ल नद्वद्वनशा

निवकमहन् नमो विद्ये नमो धूनवन पशुमन
कामिनी गृहे स्त्री नमो नार्क काटिविलसने ॥ स्त्री
प्राप्तिर्वागवामर्दि नमो लाधली नदिनलया स्त्रीमह
कलिकी यथा लीटयदी दिग्वसना मूमूर्क
धनुर्जी ॥ द्वि नमो नमो यमिलः समुद्रलदगृह्णीति
वर्फी यनांवालादित्य समयकाधविलसने नमो

सिनिवामादनायनालाह वरुलगलदकाभाला
 शिवरीगय्याकीमलिस्सुर्षीकनकमनलककवरु
 लाम्बुकाभानककडीमयमनननयावः
 हिनीमासमकिंयलातीठालयादामलुनिमनय
 नीयागिनीयागनिडीदिगुकीरुक्कडीयनः
 ययनयदीधालुयीयवर्कडदुदुअदुकीदु

विदललसलानिजिहारासौविद्युताताकियू
 मरुदुदयमठनसशानिहीनीसुमहि सद्यिनाः
 मरुगालिमरुधिवेदाकिनीवर्कययीसुवकडा
 उरुकागीधिनमिविनिदिममदयादालविदेन
 सुनामनयनविदुननिमीनिमिगीविकुनय
 मससावसावराविकुवननननोअदुदुकीदु

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ म
म नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ क्लीं नमो
भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥ ह्रीं नमो
भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॐ नमो
भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥

15

10

5

0

CMTS

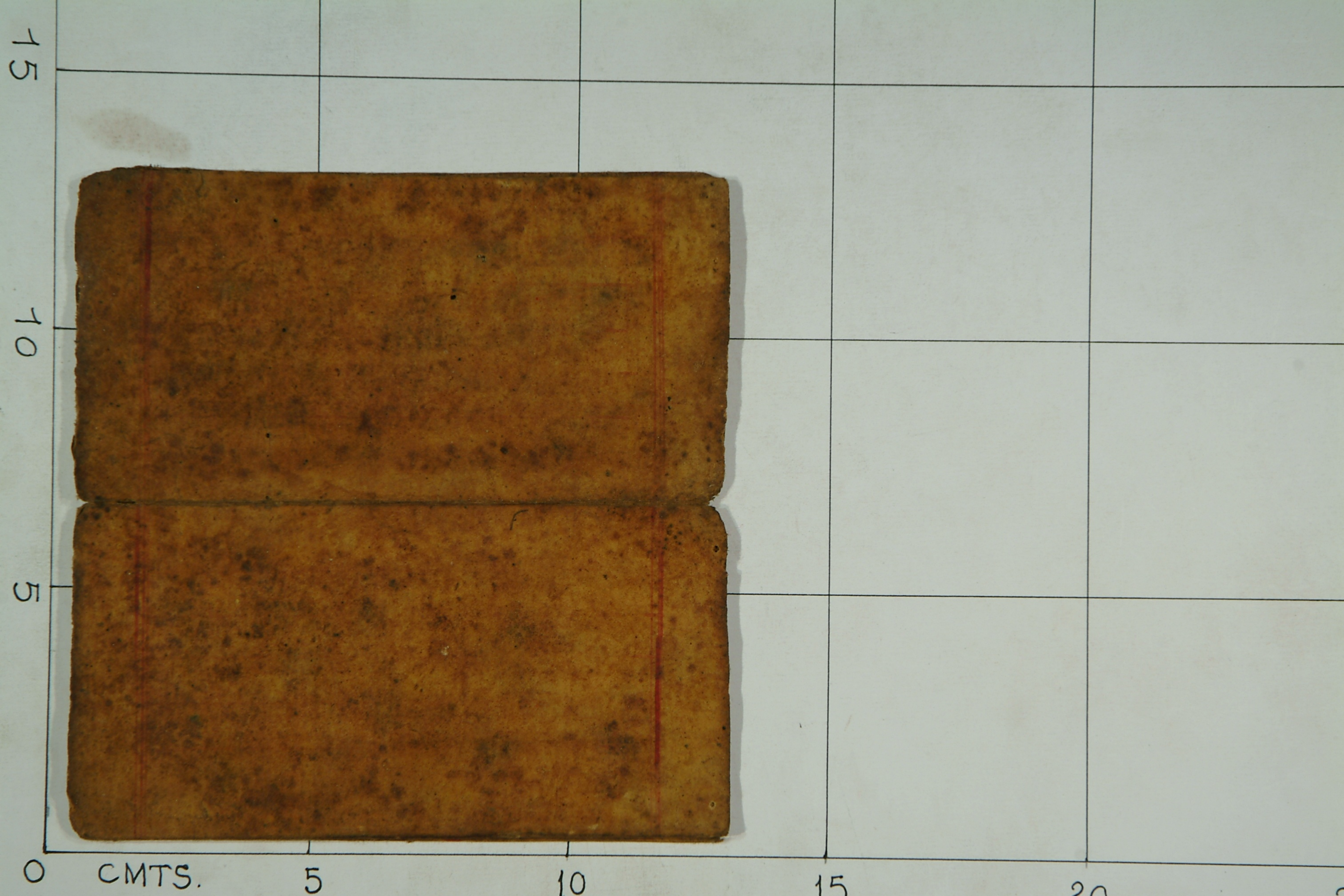
5

10

15

20





15

10

5

0

CMTS.

5

10

15

20



